आओ, संवारें अपने त्यौहारों को

नवनीत कुमार गुप्ता

हमारा देश उत्सवों और त्यौहारों का देश है। यहां हर दिन कोई न कोई त्यौहार होता है। त्यौहार हममें नई ऊर्जा का संचार करने के साथ ही भाईचारे और स्नेह की भावना को बढ़ाते हैं। हम भारतवासी बड़े धार्मिक लोग हैं। लेकिन इन धार्मिक भावनाओं के कारण यदि वातावरण प्रदूषित हो तो यह धर्म नहीं कहा जा सकता।

आजकल हम जाने-अनजाने धार्मिक क्रियाकलापों के द्वारा पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं। पूजा-पाठ और विभिन्न धार्मिक कर्मकांडों के दौरान निकलने वाली फूल-मालाएं, यज्ञ की भस्म व अन्य सामग्रियों के द्वारा न चाह कर भी हम पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। मूर्ति स्थापना वाले त्यौहारों, जैसे गणेश पूजा और दूर्गा पूजा के दौरान तो हम बड़े पैमाने पर पर्यावरण की शुचिता को दरकिनार कर देते हैं। आधुनिक समय में धार्मिक कार्यक्रमों के दौरान प्लास्टिक का चलन बढ़ता ही जा रहा है और यह तो हम जानते ही हैं कि प्लास्टिक हमारे पर्यावरण के लिए नुकसानदायक है क्योंकि यह प्रकृति में वर्षों तक अपघटित नहीं होता है। जलाने पर यह पानी, मिट्टी और हवा को प्रदूषित करता है।

पूजा-पाठ में आजकल अधिकतर चीज़ें प्लास्टिक एवं कृत्रिम रूप से तैयार की गई होती हैं। और तो और, प्रतिमाओं पर फूल भी प्लास्टिक के चढ़ाए जा रहे हैं। इसी तरह आजकल प्रतिमाओं में प्लास्टर ऑफ पेरिस के अलावा तांबा, क्रोमियम व निकल जैसी भारी धातुएं उपयोग की जाती हैं। जब इन प्रतिमाओं को नदी, तालाबों, झीलों आदि में प्रवाहित किया जाता है तो वहां का पानी प्रदूषित हो जाता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जल स्रोतों को प्रदूषित करना नैतिक अपराध है। दरअसल, जल स्रोतों को प्रदूषित करना धार्मिक और नैतिक दोनों दृष्टि से उचित नहीं है।

वैसे हम यह भी कर सकते हैं कि यज्ञ की भस्म, फूल-मालाएं, प्रतिमाएं, फोटो आदि नदी-तालाबों में प्रवाहित न करें। कई पदार्थ, जैसे फूल-मालाएं, तो खेतों में खाद के रूप में उपयोग किए जा सकते हैं। मूर्तियों को पहनाए जाने वाले कपड़ों को बाद में ज़रूरमंद लोगों में बांटा जा सकता है। मूर्तियों को रंग करने लिए प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर रसायनिक रंगों के उपयोग से होने वाले प्रदूषण से बचा जा सकता है।

असल में नदियों व अन्य जल स्रोतों को प्रदूषण से बचाने का दायित्व आम लोगों का ही है। धार्मिक कर्मकांडों से प्रदूषित होती नदियों को बचाने के लिए इको-फ्रेंडली यानी प्रकृति मित्र तरीके अपनाए जाने चाहिए। जैसे, मूर्तियां केवल मिट्टी की ही बनानी चाहिए। किसी भी विषैली धातु व प्लास्टिक के उपयोग से बनी मूर्तियां अंततः पर्यावरण के प्रदूषण का कारण बनती हैं।

हालांकि अब कई लोग त्यौहारों के दौरान इको-फ्रेंडली पद्धतियां अपना रहे हैं। इस साल गणेश पूजा एवं दुर्गा पूजा के लिए अनेक स्थानों पर मूर्तियां इको-रंग से बनाई गई हैं जिसे एक अच्छी शुरुआत कहा जा सकता है। सरकार की तरफ से भी पूजा-पंडालों में सौर लाइटों की व्यवस्था पर ध्यान दिया जा रहा है ताकि जनमानस में पर्यावरण संरक्षण की भावना का विकास किया जा सके। त्यौहारों को संवारने के लिए ऐसे ही प्रयोग करने होंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***